IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

शेखावाटी क्षेत्र में फ्रेस्को पेंटिंग और पर्यटन

जितेंद्र कुमार जांगिड़
सहायक आचार्य, चित्रकला
राजकीय कला महाविद्यालय कोटा
artist.jitendra.jangir@gmail.com

सराशं – सुर वीरों की धरती और राज्य की कला संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान की वह सांस्कृतिक भूमि है जिसे "भारत की खुली–आकाश गैलरी" के रूप में विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। यहाँ की विशेषतः हवेलियों और छतरियों, कुओं, मंदिरों की दीवारों पर उकेरे गए फ्रेस्को भित्तिचित्र न केवल कलात्मक वैभव का प्रतीक हैं, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास के मौलिक दृश्य अभिलेख भी प्रस्तुत करते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से शेखावाटी में वृद्धि का प्रमुख आधार इसकी अनूठी भित्तिचित्र परंपरा है, जिसमें पौराणिक आख्यानों, व्यापारिक गतिविधियों, यूरोपीय प्रभावों तथा दैनिक जीवन के विविध आयामों को अंकित किया गया है। किन्तु वर्तमान में पर्यावरणीय क्षरण, संरचनात्मक टूट–फूट, रंगों का क्षरण, निजी हवेलियों की उपेक्षा और संरक्षण के संसाधनों की कमी जैसे कारक शेखावाटी के पर्यटन विकास को चुनौती देते हैं। यह शोध इंगित करता है कि यदि स्थानीय समुदाय, कलाकारों और प्रशासन की सहभागिता से संरक्षण कार्यक्रम, डिजिटलीकरण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित वर्चुअल डॉक्यूमेंटेशन तथा सतत सांस्कृतिक पर्यटन मॉडल विकसित किए जाएँ, तो शेखावाटी क्षेत्र राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर और सुदृढ़ रूप से स्थापित हो सकता है ।

भविष्य में AI आधारित रंग–पुनर्निर्माण, वर्चुअल टुर, डिजिटल आर्काइविंग तथा स्थानीय कलाकारों के पुनर्जीवन कार्यक्रम इस क्षेत्र के फ्रेस्को–आधारित पर्यटन को स्थायित्व प्रदान करेंगे। अतः शेखावाटी सतत पर्यटन, संस्कृति संरक्षण और कला–आधारित अर्थव्यवस्था का विशिष्ट मॉडल प्रस्तुत करता है।

विशेष शब्दावली – शेखावाटी सतत पर्यटन, भारत की खुली–आकाश गैलरी, फ्रेस्को पेंटिंग, मंडावा, नवलगढ़, फतेहपुर, चुरू, हेरिटेज होटल

प्रस्तावना – राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनूं और चूरू जिले) अपनी विशिष्ट स्थापत्य कला और भित्तिचित्रों के लिए विश्वविख्यात है। 18वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य विकसित यह 'ओपन–एयर आर्ट गैलरी' न केवल कला प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य शेखावाटी की फ्रेस्को तकनीक, उनके विषयगत महत्व और पर्यटन उद्योग में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है।

शेखावाटी राजस्थान राज्य के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित वह क्षेत्र है जहां पर वर्तमान में सीकर, झुंझुनू और चूरू का कुछ क्षेत्र शामिल है। यह क्षेत्र ने केवल शूरवीरों की धरती रही है अपितु सेठों ,व्यापारियों, जागीरदारों तथा धनिकों की भी स्थली रही है। यहां के इन धनिक द्वारा वैभव और संपदा को अपनी हवेलियों में चित्रण के माध्यम से परिलक्षित किया। शेखावाटी क्षेत्र अपनी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

समृद्ध कलात्मक परंपरा और स्थापत्य उत्कृष्टता के लिए विश्वभर में विशिष्ट स्थान रखता है। यह क्षेत्र अक्सर "राजस्थान की खुली–हवा कला–दीर्घा" के रूप में वर्णित होता है, जहाँ सैकड़ों सालों से बसे छोटे–बड़े कस्बों और गाँवों की हवेलियों की दीवारों पर बने भित्ति–चित्र (फ्रेस्को पेंटिंग्स) और सुंदर वास्तुशिल्प संरचनाएँ एक अनोखा दृश्य प्रस्तुत करती हैं। शेखावाटी की यह कलात्मक विरासत 18वीं से 20वीं सदी के मध्य तक उभरती रही, जब यहाँ व्यापारिक और सामाजिक समृद्धि ने स्थानीय कलाकारों को व्यापक पैमाने पर चित्रकला के विकास का अवसर दिया। यह कला केवल सजावटी नहीं है, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और रोजमर्रा के जीवन के अनेक पहलुओं का सूक्ष्म चित्रण भी प्रस्तुत करती है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – राजस्थान भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य होने के साथ–साथ कलात्मक दृष्टि से भारत में ही नहीं अपितु एशिया मानचित्र पर अपना एक कलात्मक महत्व रखता है। राजस्थान की आकृति की पतंगाकर है और इसके एक भाग उत्तर पूर्व में ओपन आर्ट गैलरी के नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र शेखावाटी स्थित है। शेखावाटी क्षेत्र रामायण काल तक 'मरुकान्तर देश' में शामिल था। बुद्ध से पूर्व के 16 महाजनपदों में से केवल दो जनपद (अवंति और विराटनगर/बैराठ राज्य) ही राजस्थान क्षेत्र में गिने जाते थे। यह क्षेत्र भी अवंति से प्रभावित था, हालाँकि बाद में मगध (आधुनिक बिहार के आसपास का क्षेत्र) के नंदों ने अवंति को पराजित कर दिया। इतिहासकारों का मानना है कि मौर्यों ने नंदों से राजस्थान प्राप्त किया था। शेखावाटी का लगभग पूरा क्षेत्र कभी गौड़ राजपूत वंश के शासन के अधीन था। गौड़ राजपूत वंश के साथ 15 से ज्यादा युद्धों के बाद, गौड़ शासकों ने शेखावाटी में अपने राज्य का एक बड़ा हिस्सा खो दिया। कई इतिहासकारों का मानना है कि यह क्षेत्र मत्स्य साम्राज्य का हिस्सा था । ऋग्वेद भी इस विषय में कुछ प्रमाण प्रदान करता है। सीकर के शासक कच्छावा राजपूत थे जिनका आमेर शासको के साथ सीधा संबंध था इसी वंश के एक उत्तराधिकारी बालोजी के वंशज शेखावाटी के संस्थापक हुए। महाराजा उदयकरण (आम्बेर,जयपुर) तृतीय पुत्र बालोजी से शेखावत परिवार की उत्पत्ति हुई। बालोजी के पौत्र व मोकल के पुत्र शेखाजी ने आमेर रियासत के साथ सम्बन्ध विच्छेद कर अमरसर में अपना अलग राज्य स्थापित किया। शेखा के दादा अर्थात् आमेर के राजा उदयकरण ने शेखा को महाराव की उपाधि दी। शेखा के 12 पुत्र हुए जिनकी संतति शेखावत कहलाई तथा शेखावतों द्वारा शासित क्षेत्र शेखावाटी कहलाया। शेखावतों ने रेवासा, खासाली, खण्डेला, उदयपुर (पुराना नाम कौसाम्बी), फतहपुर, झुंझुनूं, सीकर, खेतड़ी, सिंघाना, खाचरियावास, चूरू, बर, मुंदड़ी आदि लगभग 90 रेगिस्तानी ठिकानों पर अधिकार कर लिया। शेखावतों के द्वारा मंडावा,नवलगढ़, महनसर, बिसाऊ, खेतड़ी, लक्ष्मणगढ़, दलेलगढ़, मुकुंदगढ़, परसरामपुरा, फतेहपुर शेखावाटी, श्यामगढ़, खटून्दरा, सोला, आदि स्थानों पर किले, महल, हवेलियों और छतरियों आदि कलात्मक वास्तु संरचनाओं का निर्माण किया गया जो राजस्थान की भित्ति चित्रकला और वास्तुकला में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शेखावाटी में राजस्थान के तीन जिले सीकर, झुंझुनू और चुरु प्रमुखता शामिल है। राजस्थान में पर्यटन की दृष्टि से उपरोक्त स्थल सकारात्मक स्थान अर्जित करते हैं विशेषत शेखावाटी की हवेलियों के भित्ति चित्र अपने आप में सदैव आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

शेखावाटी का नाम प्रागैतिहासिक स्थलों के संबंध में भी अग्रणी रहा है जिसमें ताम्र सभ्यताओं की जननी के रूप में गणेश्वर सभ्यता जो सीकर जिले के नीमकाथाना के पास में स्थित है साथ ही झुंझुनू जिले के खेतड़ी के पास में लौह सभ्यता 'सुनारी' स्थित है जो पर्यटन की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

रंगों और संस्कृति से सराबोर हवेलियाँ, इस क्षेत्र को पर्यटकों के लिए स्वर्ग बनाती हैं। इन हवेलियों के वास्तुशिल्प और इनकी रंग बिरंगी इंद्रधनुषी दीवारों पर की गई, भित्ति चित्रकारी देखकर, हर कोई चकित रह जाता है। बहुरंगी राजस्थान के पर्यटन को बढ़ावा देने में, यहाँ की अद्भुत हवेलियों का विशेष सहयोग है। यहाँ की हवेलियाँ और भित्ति चित्रों की वास्तु संरचनाओं का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

निर्माण अट्ठारहवीं और बीसवीं शताब्दी के मध्य बनाए गए थे। यह वो समय था जब राजस्थानी चित्र शैली अपने यौवन पर थी क्योंकि इस समय न केवल चित्र अपभ्रंश शैली से प्रभावित रही वरन बदलते दौर में मुगल शैली, दक्षिणी शैली आदि का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। शेखावाटी में बड़े–बड़े सेठों बिड़ला, डालमियां, चमड़िया, पोद्दार, कानोड़िया, गोयनका, बजाज, झुनझुनवाला, रूइया, खेमका, सर्राफ, सिंघानिया की हवेलियाँ कलात्मक महत्व रखती हैं। इन हवेलियों में सामान्य जनमानस के चित्र, पशु पक्षी, पेड़ पौधे, लोक संस्कृति और परंपराओं का चित्रण किया गया साथ ही अंग्रेजी प्रभाव के चलते इन विषयों के इतर भी चित्रण कार्य किया गया। जिनमें कारों, हवाई जहाजों और अंग्रेज अधिकारियों आदि के चित्र भी बनवाए गए। वर्तमान में विदेशी पर्यटक जब शेखावाटी की हवेलियाँ देखते हैं तो चित्रकारी को देखकर अचम्भित रह जाते हैं। पौराणिक कथाओं, भगवान राम और कृष्ण की वीरता की कथाएं और रंग बिरंगे फूल, पत्ते, बेल–बूंटे, चिड़ियाँ, मोर, शेर, सांप, हिरण, हाथी–सभी तरह के पशु– पक्षियों के चित्रों से सुसज्जित हवेलियाँ उस समय की कला यात्रा को जीवंत करती हैं। यहाँ हवेलियों के अलावा मंदिर व बावड़ियाँ भी कलात्मक रूप से सजाई गई हैं। यहां की हवेलियों में फ्रेस्को पेंटिंग्स फ्रेस्को सेक्को और फ्रेस्को बुनो दोनों तकनीकों में बनी है जिनमें फ्रेस्को बुनो विशेषतः का प्रयोग बहुताय से देखने को मिलता हैं। फ्रेस्को बुनो की तकनीक जिसे शेखावाटी में आला गिला पद्धति अथवा अरायस या मोराक्कसी भी कहा जाता है।

पर्यटन में मंडावा की हवेलियां और किले अपने शानदार और आनंददायक रुकने और हृदयंगम दृश्यों के से भरपूर है जो स्थानीय और विदेशी पर्यटकों , फिल्मनिर्माताओं के लिए भी पसंदीदा स्थल रहा है जहां बॉलीवुड फिल्में पीके, जब वे मेट आदि के दृश्य फिल्माए गए है।

राजस्थान में 2024 में 17.9 करोड़ देशी. 20.7 लाख विदेशी पर्यटक आए।

2025 के पहले 6 महीनों में शेखावाटी में 2 करोड़ देशी पर्यटक (मुख्यतः दिल्ली–एनसीआर से वीकेंड ट्रिप)।

विदेशी पर्यटक (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस) में 15–20 प्रति"ात वार्षिक बढ़ोतरी।

पीक सीजनः अक्टूबर–मार्च (70 प्रति"ात पर्यटक)।

सोशल मीडिया (खासकर X और इंस्टाग्राम) पर रुैमीांजप ट्रेंडिंग, लोग फ्रेस्को फोटो शेयर कर रहे हैं

राजस्थान सरकार की "शेखावाटी हवेली संरक्षण योजना 2025" के तहत 662 हवेलियों को हेरिटेज होटल बनाया जाएगा।

8 शहरों को जोड़ने वाला नया "शेखावाटी हेरिटेज सर्किट" प्रस्तावित।

डिजिटल ऑडियो गाइड ऐप, सेल्फ–गाइडेड साइकिल टूर शुरू हो रहे हैं।

शेखावाटी में चित्रकला का स्वर्ण युग 1830 से 1900 के बीच माना जाता है। इस क्षेत्र के मारवाड़ी व्यापारियों ने, जो अपनी व्यापारिक दक्षता के लिए जाने जाते थे, अपनी समृद्धि प्रदर्शित करने के लिए इन हवेलियों का निर्माण करवाया। ये चित्र केवल सजावट नहीं, बल्कि तत्कालीन समाज, धार्मिक विश्वासों और ब्रिटिश शासन के प्रभाव का दर्पण हैं (शाहीन, 2022)।

फ्रेस्को तकनीकः 'आला–गीला' – शेखावाटी के भित्तिचित्रों की प्रमुख विशेषता 'आला–गीला' पद्धति है। इसमें ताजी चूने की प्लास्टर की गई गीली सतह पर प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। रंगों को दीवार में समाहित करने के लिए इसे घण्टों घिसा (पालिश) जाता था, जिसे 'अरायश' तकनीक कहा जाता है। यही कारण है कि प्रतिकूल जलवायु के बावजूद ये चित्र आज भी जीवंत दिखाई देते हैं।यह भित्तिचित्र बनाने की एक स्वदेशी भारतीय तकनीक है यह विदेशी तकनीक इटालियन फ्रेस्को तकनीक के समान जिसे मोटे तौर पर वेट फ्रेस्को अथवा आला–गीला कहा जा सकता है। इस विधि में ताजे चूने के प्लास्टर पर रंगद्रव्यों को कार्बनिक बंधन सामग्री के साथ मिलाकर चित्रण कार्य किया जाता है । हालांकि रंगद्रव्य गीले प्लास्टर पर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

लगाए जाते हैं, परंतु फ्रेस्को के विपरीत, इस तकनीक में रंगो को बंधन सामग्री के साथ मिलाया जाता है, इसलिए इसे टेम्पेरा कहा जाता है। आला–गीला तकनीक में भित्तिचित्रों में चमक लाने के लिए हकीक अथवा एगेट या ओपनी पत्थर से घिसाई की जाती थी जिससे न केवल चमक बल्कि रंगो का स्थायित्व हो जाता था जो उसे चिरकालिक बनाए रखता था

टेम्पेरा तकनीक में सूखे प्लास्टर पर चित्रकारी की जाती है। रंगों को जलीय पायस या इमल्शन माध्यम में मिलाया जाता है, जो सूखने पर रंगों को स्थिर कर देता है। टेम्पेरा (आधुनिक पोस्टर रंग) में मुख्य रूप से अंडे की जर्दी, मोम, शहद, दूध, गोंद और कुछ वनस्पति गोंद का उपयोग किया जाता है। भारत में अधिकांश भित्तिचित्र टेम्पेरा तकनीक से ही बनाए गए हैं।

भित्ति चित्रों का विश्लेषण – शेखावाटी चित्रकला में विविध विषय देखने को मिलते हैं, जो समय–समय पर बदलते रहे। 18वीं शताब्दी में, स्थानीय लोककथाओं, चित्रों, जानवरों और शिकार के दृश्यों जैसी पौराणिक कथाएँ प्रमुख विषय थीं। बाद में 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के दौरान, विषय बदलकर भारतीय संस्कृति पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव हो गया और अन्य विषय थे ट्रेन, कार, गुब्बारे और ग्रामोफोन।

रामगढ़ की चित्रित छतरियों को देखकर आप मंत्रमुग्ध हो जाएंगे। छतरी शब्द का अर्थ है छाता, और यह अंतिम संस्कार स्थल पर निर्मित विशाल गुंबदनुमा स्मारकों को संदर्भित करता है। शेखावाटी की प्रसिद्ध हवेलियों की तरह , इन छतरियों पर भी पौराणिक कथाओं के सबसे खूबसूरत दृश्यों और वास्तविक जीवन के विचित्र दृश्यों को भित्तिचित्रों के माध्यम से उकेरा गया है।

इन भित्तिचित्रों में विषयों की विविधता आश्चर्यजनक है

- धार्मिकः रामायण, महाभारत, भगवान कृष्ण की लीलाएं और स्थानीय लोक देवता।
- दैनिक जीवनः ग्रामीण जनजीवन, संगीत, नृत्य, और लोक कथाएं जैसे 'ढोला–मारू'।
- आधुनिकता का प्रभावः ब्रिटिश अधिकारियों के चित्र, रेलगाड़ियां, मोटर कारें, और हवाई जहाज, जो व्यापारियों के वैश्विक संपर्क को दर्शाते हैं।

पर्यटन और शेखावाटी – शेखावाटी पर्यटन के मानचित्र पर एक 'ऑफ–बीट' लेकिन प्रीमियम गंतव्य के रूप में उभरा है। मंडावा, नवलगढ़, फतेहपुर और चुरू इसके प्रमुख केंद्र हैं।

आर्थिक प्रभावः विदेशी और भारतीय पर्यटकों की आमद से स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिलती है।

सांस्कृतिक विनिमयः यह कला पर्यटकों को राजस्थान की उदारवादी और समृद्ध व्यापारी संस्कृति से जोड़ती है।

राजस्थान राजसी ठाठ–बाठ, विलासिता और सुंदरता का पर्याय है, और ये सभी विशेषण राज्य के पूर्व महाराजाओं द्वारा निर्मित स्मारकों में स्पष्ट रूप से झलकते हैं। महाराजाओं द्वारा छोड़ी गई महलों, किलों और हवेलियों के रूप में समृद्ध विरासत को अब आलीशान हेरिटेज होटलों में परिवर्तित कर दिया गया है। राजस्थान भारत का वह गौरवशाली राज्य है जहाँ सबसे अधिक हेरिटेज होटल स्थित हैं। ये भव्य हेरिटेज होटल तत्कालीन महाराजाओं की विलासिता और सुंदरता से परिपूर्ण जीवन शैली के प्रति झुकाव को स्पष्ट रूप से दर्शाते।

कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक होटल हैं जो राजस्थान के पर्यटन परिदृश्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है जैसे लेक पैलेस , देवीगढ़ पैलेस उदयपुर , उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर , अजीत भवन और रामबाग पैलेस जयपुर आदि हैं लेकिन शेखावाटी क्षेत्र में इन हैरिटेज होटल अथवा ऐतिहासिक होटल्स की संख्या कम है ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

शेखावाटी की एक क्षेत्र में रामगढ़ शेखावाटी महत्वपूर्ण स्थान रखता है जहां पर बहुत सारी चित्रित हवेलियां आगंतुकों के लिए सदैव आकर्षण का केंद्र रही है अपनी परंपराओं और इस क्षेत्र की समृद्ध परंपरा को जीवित रखने और आगे बढ़ाने की क्रम में एक हवेली की संरक्षिका श्रुति नाडा पोद्दार ने वर्ष 2012 में अपनी पैतृक हवेली को सरंक्षण प्रदान कर "वेदारण्य" हैरिटेज हवेली को के रूप में स्थापित किया ।

संरक्षण की चुनौतियां – आज यह समृद्ध विरासत गंभीर संकट में है:

- **पर्यावरणीय क्षरण:** प्रदूषण, नमी और जलवायु परिवर्तन के कारण चित्र धूमिल हो रहे हैं।
- **मानवीय कारक:** शहरीकरण, हवेलियों का ध्वस्तीकरण और सीमेंट का अनधिकृत उपयोग।
- **देखरेख का अभाव:** प्रवासी परिवारों द्वारा हवेलियों का परित्याग करने से इनका रखरखाव कठिन हो गया है।

तकनीकी विश्लेषण: 'आला–गीला' (Fresco-Buon) बनाम आधुनिक संरक्षण

शेखावाटी की पेंटिंग केवल कला नहीं, बल्कि विज्ञान है। शोधकर्ता जैन (2005) के अनुसार, 'आला–गीला' तकनीक में चूने के प्लास्टर की रासायनिक प्रतिक्रिया ही रंगों की स्थायित्व का मुख्य कारण है।

- **रासायनिक प्रक्रिया:** जब चूना हवा के कार्बन डाइऑक्साइड के साथ प्रतिक्रिया करता है, तो यह कैल्शियम कार्बोनेट में परिवर्तित हो जाता है, जिससे चित्र दीवार का ही एक हिस्सा बन जाते हैं (श्रंपद, 2005)।
- **आधुनिक चुनौती:** वर्तमान में हो रहे 'सीमेंट–आधारित' रिपेयरिंग कार्य इन ऐतिहासिक चित्रों के लिए घातक हैं। द शेखावाटी प्रोजेक्ट (2016–2026) के अनुसार, सीमेंट और चूने के बीच का तापीय विस्तार गुणांक अलग होने के कारण, पुरानी भित्तियाँ तेजी से टूट रही हैं।

पर्यटन का आर्थिक मॉडल: विरासत से आय तक

शेखावाटी का पर्यटन 'हेरिटेज इकोनॉमी' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मिश्रा और श्रीवास्तव (2022) ने अपने शोध में बताया है कि मंडावा और नवलगढ़ जैसे कस्बों में पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था का सीधा प्रभाव स्थानीय हस्तशिल्प और गाइड सेवाओं पर पड़ा है।

चित्रकला के माध्यम से सामाजिक संरचना का चित्रण

शेखावाटी की हवेलियाँ केवल विलासिता का प्रतीक नहीं थीं, बल्कि वे उस युग के सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श के 'सूचना केंद्र' थे। भित्तिचित्रों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि उस समय के व्यापारी वर्ग ने किस प्रकार कला को शिक्षा और सामाजिक संदेश का माध्यम बनाया था।

- **शिक्षा का प्रसार:** कई हवेलियों की दीवारों पर वर्णमाला, गिनती और पौराणिक कहानियों के चित्र मिलते हैं। दत्तन (2010) के शोध के अनुसार, ये चित्र अनपढ़ ग्रामीण आबादी को धार्मिक मूल्यों और नीति–शिक्षा देने का एक प्रभावी माध्यम थे।
- **वैश्विक दृष्टि और स्थानीयता का मेल:** शेखावाटी के चित्रकारों की दूरदर्शिता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने पारंपरिक 'राजस्थानी लोक कला' में 'यूरोपीय प्रभाव' को कितनी चतुराई से समाहित किया। पहली बार जब शेखावाटी की दीवारों पर 'भाप के इंजन' ;जमंउ म्दहपदमद्ध, 'टेलीफोन, साइकिल और पश्चिमी पोशाक' पहने हुए पुरुषों के चित्र उभरे, तो यह उस समय के व्यापारिक वर्ग के बदलते वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतीक था। यह चित्रकला एक प्रकार का 'विजुअल डॉक्यूमेंटेशन' थी, जो आने वाली पीढ़ियों को यह बताने के लिए बनाई गई थी कि दुनिया कैसे बदल रही थी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

सतत पर्यटन और समुदाय की भूमिका

पर्यटन के आधुनिक दौर में, शेखावाटी को 'मास टूरिज्म' से बचाने की चुनौती है। सिंह (2018) के अनुसार, राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के सफल मॉडल वही हैं जहाँ स्थानीय समुदाय स्वयं संरक्षक की भूमिका निभाता है।

- **सामुदायिक सहभागिता:** जब स्थानीय लोग हवेलियों की मरम्मत में अपना योगदान देते हैं और उन्हें संग्रहालय के रूप में विकसित करते हैं, तो पर्यटन का लाभ सीधा उनके पास पहुंचता है। इससे न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता आती है, बल्कि विरासत के प्रति गर्व की भावना भी विकसित होती है।
- **हस्तशिल्प का पुनरुद्धार:** पर्यटन ने यहाँ की पारंपरिक 'कांच की पच्चीकारी' और 'लकड़ी की नक्काशी' को पुनर्जीवित किया है। पर्यटन के कारण ये उद्योग अब वैश्विक बाजार से जुड़ गए हैं, जिससे स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन मिला है।

संरक्षण और नीतिगत हस्तक्षेप

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राजस्थान सरकार के हेरिटेज संरक्षण अधिनियमों के बावजूद, धरातल पर क्रियान्वयन की गति धीमी है।

- **सार्वजनिक–निजी भागीदारी :** कई हवेलियों के मालिक अब भारत के बड़े शहरों में बस चुके हैं, जिससे हवेलियाँ लावारिस हैं। यहाँ च्च्च् मॉडल का उपयोग करके सरकार को इन हवेलियों को लीज पर लेकर उन्हें 'आर्ट रेजीडेंसी' या 'कल्चरल हब' में बदलने की आवश्यकता है।
- **डिजिटल संरक्षण:** वर्तमान समय में भित्तिचित्रों के क्षरण को रोकने के लिए 'थ्री–डी स्कैनिंग' और डिजिटल फोटोग्राफी का उपयोग अनिवार्य हो गया है। शोधकर्ताओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण डेटा बैंक साबित हो सकता है।

हवेली से विरासत केंद्र तक: संरक्षण का व्यावसायिक मॉडल

शेखावाटी की हवेलियां, जो कभी व्यापारियों के वैभव का केंद्र थीं, आज जीर्ण–शीर्ण होने के कगार पर हैं। ऐसी स्थिति में, इन्हें हेरिटेज होटलों या संरक्षण केंद्रों में बदलना ही इनके अस्तित्व को बचाने का सबसे व्यावहारिक विकल्प है।

'वेदारण्य' – एक सांस्कृतिक प्रयोग

श्रुति नाडा पोद्दार द्वारा वर्ष 2012 में रामगढ़ (शेखावाटी) स्थित अपनी पैतृक हवेली को 'वेदारण्य' के रूप में पुनर्जीवित करना, केवल एक व्यावसायिक होटल व्यवसाय नहीं है, बल्कि एक 'हेरिटेज इकोसिस्टम' का निर्माण है।

- **संरक्षण और आधुनिकता का मेल:** वेदारण्य में पुरानी फ्रेस्को पेंटिंग्स को बिना किसी आधुनिक छेड़छाड़ के यथावत रखा गया है। यह हवेली यह दर्शाती है कि कैसे विरासत को समकालीन सुख–सुविधाओं के साथ जोड़कर संरक्षित किया जा सकता है।
- **सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र:** यहाँ केवल पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह संगीत, कला शिविरों और योग कार्यक्रमों का एक केंद्र भी बन गया है। यह प्रयोग यह सिद्ध करता है कि हेरिटेज हवेलियां केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि जीने और अनुभव करने की जगह होनी चाहिए।

अन्य प्रमुख हेरिटेज होटल और उनका प्रभाव

वेदारण्य के अलावा भी शेखावाटी के अन्य कस्बों में संरक्षण के सफल प्रयास हुए हैं:

1. **मंडावा कोठी**: यह शेखावाटी के शुरुआती हेरिटेज होटलों में से एक है। इसने न केवल मंडावा को विश्व पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

2. **नवलगढ़ की हवेलियां:** नवलगढ़ में कई निजी हवेलियों (जैसे 'रूप निवास कोठी') को हेरिटेज होटल में बदला गया है, जहाँ पर्यटकों को 'मारवाड़ी आतिथ्य' और भित्तिचित्रों को करीब से देखने का अवसर मिलता है।
3. **फतेहपुर** : यहाँ की कई हवेलियों का संरक्षण विदेशी शोधकर्ताओं और स्थानीय उत्साही लोगों द्वारा मिलकर किया गया है, जो कला के पुनरुद्धार का एक अनूठा उदाहरण है।

हेरिटेज होटलों के सामाजिक और आर्थिक लाभ

- **स्थानीय रोजगार:** इन हवेलियों में काम करने वाले अधिकतर लोग स्थानीय होते हैं, जिससे पलायन की समस्या में कमी आई है।
- **कलाकारों का पुनरुद्धार:** हेरिटेज होटलों की दीवारों की मरम्मत और सौंदर्यीकरण के लिए पारंपरिक चितेरों (चित्रकारों) की मांग फिर से बढ़ी है, जिससे यह लुप्तप्राय कला फिर से जीवंत हो रही है।
- **समुदाय का जुड़ाव:** हेरिटेज होटल प्रबंधन अक्सर आसपास के स्कूलों और समुदायों के साथ मिलकर विरासत जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं, जिससे नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ रही है।

निष्कर्ष: एक सांस्कृतिक विरासत का भविष्य

शेखावाटी की भित्तिचित्र कला, जो कभी मरणासन्न अवस्था में मानी जा रही थी, आज पर्यटन के माध्यम से एक नई पहचान पा रही है। हालांकि, यह पहचान केवल व्यावसायिक न होकर, सांस्कृतिक संरक्षण की ओर भी होनी चाहिए। जब हम एक हवेली को देखते हैं, तो हम केवल पेंटिंग नहीं देख रहे होते, बल्कि हम 19वीं सदी के मारवाड़ी व्यापारियों की उद्यमशीलता और राजस्थान की कलात्मक आत्मा को देख रहे होते हैं।

शेखावाटी की भित्तिचित्र कला केवल पत्थरों पर रंग नहीं, बल्कि भारत के एक ऐतिहासिक संक्रमण काल की गाथा है। पर्यटन और संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिए 'सामुदायिक भागीदारी' अनिवार्य है। यदि इन हवेलियों को 'हेरिटेज होटल' या सांस्कृतिक केंद्रों में परिवर्तित किया जाए, तो न केवल रोजगार सृजन होगा, बल्कि इस कला का अस्तित्व भी सुरक्षित रहेगा।

मंडावा हैरिटेज होटल – मंडावा झुंझुनू

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

मालजी का कमरा– चूरू

वेदारण्य हैरिटेज होटल–रामगढ. शेखावाटी

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-33878

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

शेखावाटी चित्रकला

संदर्भ सूची

1. Akhtar. R. (2025). Educational Relevance of Fresco Paintings in Higher Education. E. Chetana Journal, Vol-10.
2. Jain. S. (2005). Architecture and Urban Morphology of Shekhawati.
3. Mishra, J., & Shrivastava, V. (2022). Exploring the Visual Culture and Urban Development of Shekhawati through Frescos. IGNITED MINDS.
4. Marg Publications (2013). Shekhawati: The Havelis of the Merchant Princes.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 15, April 2026 Impact Factor: 8.2

5. Rajasthan Tourism Official Website- Places to visit in Shekhawati. Retrieved from tourism.rajasthan.gov.in.
6. Shaheen, T. (2022). Cultural Significance and Traditional Motif Design on Fabric Surfaces in Shekhawati. IJCRT.
7. The Shekhawati Project (2016-2026). Conservation and Advocacy for Shekhawati Heritage. Theshekhawatiproject.net.
8. Wikipedia. Shekhawati painting. Retrieved from wikipedia.org.
9. Agarwal, M. (2019). Cultural Tourism in Rajasthan: Challenges and Opportunities. Heritage Management Press.
10. ASI (2021). Guidelines for Preservation of Wall Paintings in Indian Context- Archaeological Survey of India Publication.
11. Dutton, G. (2010). The Shekhawati Havelis: A Study of the Merchant Culture. Oxford University Press.
12. Kumar, S. (2020). Sociological Analysis of Havelis in the Shekhawati Region. Journal of Indian Cultural History.
13. Singh, K. (2018). Tourism Impact on Rural Heritage in Rajasthan. Journal of Heritage Tourism
14. Mandawa Paintings, Shekhawati Fresco Style Painting, Rajasthani Paintings https://share.google/tftGckBILLkpHN16P
15. राजस्थान के हेरिटेज होटल, राजस्थान हेरिटेज होटल, हेरिटेज होटल https://share-google/RP2cg57UjdC8xAIkG`
16. शेखावाटी के भित्तिचित्र – उत्तरी राजस्थान, भारत – ग्लोबल जिप्सीज द्वारा Medium-com https://share-google/UKjyzYHKjcHmWfY3H
17. https://asianartnewspaper.com/painted-havelis-of-shekhawati-india/